ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

एक एव नमस्यो विक्ष्वीड्यः। अथर्व. 2/2/1
हे मनुष्यों प्रजाओं में एक परमेश्वर ही पूजा के योग्य और नमस्करणीय है। O men of the world ! In this creation God alone is adorable & worthy of worship.

वर्ष 37, अंक 1 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 4 नवम्बर, 2013 से रविवार 10 नवम्बर, 2013
विक्रमी सम्वत् 2070 सृष्टि सम्वत् 1960853114
दयानन्दाब्द : 189 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानन्द का संसार पर ऋण

हमारा सौभाग्य है कि हम आधुनिक समय में रह रहे हैं। आज हमारे पास वाहन, बंगला, बैंक बैलेन्स, अन्य प्रकार के वाहन, रेल, कम्प्यूटर, मोबाइल, वायुयान, लौह पथ गामिनी रेल, बस व अच्छी सड़के हैं। घर के अन्दर ही पानी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। आवश्यकतानुसार सुन्दर, सुविधाजनक वस्त्रों की भी कमी नहीं है। हम अपने नगर, देश-विदेश में कुछ समय में ही आ जा सकते हैं। आज से 200 वर्ष पूर्व दुनियां भर में सुख सुविधाओं की इतनी सामग्री विद्यमान नहीं थी। शायद् पानी पीने के लिए किसी नदी के किनारे जाना पड़ता रहा होगा या फिर श्रमिकों के द्वारा बड़े बर्तनों में मंगा कर इकट्ठा करना पड़ता होगा। भोजन चूल्हे में बनता था जिसमें जंगल से लकड़ियां प्राप्त करनी होती थीं। तब शायद गैस-लाइटर व दिया-सलाई भी नहीं थी। चूल्हे का विकल्प कोयले से जलने वाली अंगेठी थी। आजकल की तरह एलपीजी गैस के चूल्हों का अस्तित्व नहीं था। हमें लगता है कि विद्युत के हीटर भी अधिक प्रयोग में नहीं थे क्योंकि विद्युत का उत्पादन कम था और हीटर बनाने वाले कुटीर या बड़े उद्योग नहीं बने थे। यह आम व्यक्ति के लिए एफार्डेबल भी नहीं थे। गेहूं या अनाज पीसने के लिए नदियों पर घराट बनाये जाते थे अथवा गेहूं व अनाज घर पर चक्की में पीसा जाता था जिसे घर के सदस्यों को स्वयं ही चलाना होता था। पन-चक्की या घराट आजकल की पीढियों को देखने के लिए भी दुर्लभ हो गयें हैं। शायद कहीं इक्का-दुक्का दीख जायें। लोगों का पहनावा या वस्त्र भी सरल व भद्र होते थे। फैशन तब शायद नहीं था। लोगों का चरित्र अच्छा था। भ्रष्टाचार को शायद लोग जानते ही नहीं थे। समय ने करवट ली, विकास हुआ और आज हमने अपनी आवश्यकता की प्रायः सभी वस्तुयें खोज लीं व बना लीं हैं। यदि समस्या है तो आज बीमारियां बहुत बढ़ गई हैं। आजकल के समय में अनेक बीमारियां तो ऐसी हैं जिन्हें पुराने लोग जानते ही नहीं थे, उनका जीवन प्रायः स्वस्थ व निरोगी होता था। आज रक्तचाप, मधुमेह व कैंसर जैसी बीमारियों से प्रभावित रोगियों की संख्या इतनी अधिक हो गई हैं कि सरकार द्वारा इनके सही आंकड़े भी इकट्ठे करना असम्भव है।

मनुष्य जीवन की सुख-सुविधायें की जो-जो वस्तुयें आज उपलब्ध हैं इन्होंने निःसन्देह मनुष्यों का जीवन

आसान व सुविधाजनक बना दिया है। यह विकास कैसे हुआ तो इसका उत्तर मिलता है कि यह सब विज्ञान के द्वारा सम्भव हुआ है। विज्ञान कहां से आया है, यह मुख्य विचारणीय प्रश्न है। विज्ञान कहते हैं भौतिक पदार्थों व वस्तुओं के बारे में विशिष्ट ज्ञान को। इस विशिष्ट ज्ञान या वैज्ञानिक ज्ञान का आधार हमारे वैज्ञानिक व उनकी भाषा होती है। यदि भाषा न हो तो वैज्ञानिक कुछ नहीं कर सकते अर्थात् यदि भाषा न होती तो वैज्ञानिकों ने जो बड़े-बड़े आविष्कार किये हैं, वह सम्भव नहीं थे। हम देखते हैं कि आधुनिक काल में अधिकाश आविष्कार यूरोप के देशों में हुए हैं। दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह भी है कि जिन लोगों अर्थात् वैज्ञानिकों ने विज्ञान की उन्नति की है वह यूरोप में प्रचलित ईसाई मत की मान्यताओं, मुख्यतः ईश्वर, जीवात्मा व सृष्टि की उत्पत्ति विषयक, को महत्त्व नहीं देते थे न आज देते हैं। पाश्चात्य धार्मिक विद्वान ईश्वर व धर्म विषय में वैज्ञानिकों की शंकाओं, प्रश्नों व तर्कों का समाधान नहीं कर सके। समाज में सभी को रहना पड़ता है पर यह जरूरी नहीं है कि किसी समाज में रहने वाले अपने पूरे ज्ञान व विश्वास से वहां प्रचलित मत को मानते हों। यूरोप के अधिकांश वैज्ञानिकों का भी यह गुण है कि जब तक कोई बात तर्क व प्रमाण के आधार पर सत्य सिद्ध न हो जाये, वहां के वैज्ञानिक उसे स्वीकार नहीं करते। यह भी एक, वहां विज्ञान की उन्नति होने का कारण है। हम समझते हैं कि महाभारत काल के बाद हमारे देश में अव्यवस्था कायम हो गई जिसके कारण ज्ञान के क्षेत्र में अन्धकार फैल गया और एक के बाद दूसरा, फिर तीसरा व चौथा, इस प्रकार मत-मतान्तर बढ़ते गये। संसार को बनाने वाली सत्ता के वास्तविक स्वरूप को भुला दिया गया और इसके स्थान पर एक पाषाण की मूर्ति बनाकर उससे प्रार्थना, स्तुति आदि की जाने लगी जिससे ज्ञान प्रायः समाप्त हो गया व

- शेष पृष्ठ 4 पर

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की ओर से
आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्त्वावधान में
130वां महर्षि दयानन्द निवाणोत्सव सम्पन्न
विस्तृत समाचार अगले अंक में

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के अन्तर्गत आदिवासी क्षेत्रों की कन्याओं के लिए विशेष रूप से निर्मित
अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ द्वारा आर्यसमाज सैनिक विहार के सहयोग से संचालित
शान्तिदेवी आर्य कन्या गुरुकुल सैनिक विहार, दिल्ली के
नव निर्मित भवन का उद्घाटन समारोह
रविवार 10 नवम्बर, 13 : यज्ञ : प्रातः 9 बजे ★ भजनः प्रातः 11 बजे ★ उद्घाटन : प्रातः 11:30 बजे
आर्यजन भारी संख्या में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं एवं कन्याओं को अपना आशीर्वाद प्रदान करें।

वेद-स्वाध्याय

व्रतधारी क्षत्रिय

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

धृतव्रता: क्षत्रिया यज्ञनिष्कृतो बृहद्दिवा अध्वराणामभिश्रिय:। अग्निहोतार ऋतसापो अद्रुहोऽपो असृजन्ननु वृत्रतेर्ये।। ऋग्वेद 10/66/8

अर्थ—***(धृतव्रता:)*** अन्याय को दूर करने का व्रत किया हो जिसने ***(क्षत्रिया:)*** पर पीड़ा-निवारक ***(यज्ञ निष्कृत:)*** यज्ञादि उत्तम कर्मों को नि:शेष रूप से करने वाले ***(बृहत् दिवा)*** महा तेजस्वी ***(अध्वराणाम् अभिश्रिय:)*** अहिंसा की श्री से शोभित ***(अग्नि होतार:)*** अग्निहोत्र करने वाले ***(ऋतसाप:)*** सत्य से युक्त ***(अद्रुह:)*** द्रोह-रहित क्षत्रिय ***(वृत्र तूर्ये)*** दुष्टों या बढते शत्रु को नाश करने के कार्य में ***(अनु)*** निरन्तर ***(अप: असृजन्)*** उद्योग, परिश्रम करते हैं।

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र ये शब्द जातिवाचक न होकर गुणवाचक हैं। विद्याध्ययन के पश्चात् जैसे आजकल विश्वविद्यालयों में उपाधियां प्रदान की जाती हैं वैसे ही अपने गुण, कर्म, स्वभाव और रुचि के विषय में दक्षता प्राप्त विद्यार्थी को प्राचीन समय में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र की उपाधि या उक्त वर्ण में दीक्षित किया जाता था। इनमें प्रथम तीन इन वर्णों की दीक्षा व्रत या शपथ ग्रहण करते थे। इसीलिये इन्हें '**धृतव्रता**' कहा जाता था। तद्यथा—**ब्राह्मणा व्रत चारिण:** (ऋ० ७.१०३.१) व्रतों का पालन करने वाले ब्राह्मण, **धृतव्रता क्षत्रिया: धृतव्रतो धनदा: सोमवृद्ध:** (ऋ० ६.१९.५) धनैश्वर्य की वृद्धि करने वाले कर्मों में प्रवृत्त वैश्य जन। इन तीनों वर्णों वालों ने अपने वर्ण के अनुसार कार्य करने का संकल्प लिया है। शूद्र का बौद्धिक विकास उतना नहीं हो पाया कि जिससे वह इनमें से किसी दायित्व का वहन कर सके, परन्तु वह शरीर से सुदृढ़ और धार्मिक है इसीलिये उसे इन तीनों वर्णों के कार्यों में सहयोग देने का विधान किया है जहाँ प्रशिक्षण प्राप्त कर वह भी अपना वर्ण परिवर्तन कर सकता है।

१. धृतव्रता: क्षत्रिय उसे कहते हैं जिसने अन्याय का निवारण करने का व्रत या दीक्षा ग्रहण की है और वेदों तथा मनुस्मृति आदि में वर्णित सभी कर्त्तव्यों के पालन का व्रत ग्रहण किया है। इसलिये उसे **धृतव्रत** या क्षात्रधर्म में दीक्षित मन्त्र में कहा है।

२. क्षत्रिया: क्षतात् त्रायते जो प्रजा को अन्याय, अत्याचार से बचाये वह क्षत्रिय कहलाता है।

३. यज्ञ निष्कृत: यज्ञादि उत्तम कर्मों को करने और उनकी रक्षा करने वाले। जैसे श्रीराम-लक्ष्मण ने विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा की।

४. बृहद् दिवा—महातेजस्वी, जिसके बल-पराक्रम की दुन्दुभि द्युलोक तक गूंज रही हो।

५. अध्वराणामभिश्रिय:—अहिंसा की श्री से सुशोभित, बड़े-बड़े अश्वमेध, राजसूय आदि के करने से लब्धप्रतिष्ठत।

६. अग्निहोतार:—अग्निहोत्र, यज्ञ करनेवाले।

७. ऋत साप: सत्य से युक्त, जिनकी कथनी-करनी एक जैसी हो **प्राण जाय पर वचन न जाई।**

८. अद्रुह:—द्रोह से रहित, पुत्रवत् प्रजा के पालन में तत्पर

९. अपो असृजन्ननु वृत्रतूर्ये—दुष्टों के विनाश में सदैव प्रयत्नशील क्षत्रियों का कर्म शरीर-आत्मा का बल बढ़ा साम्राज्य की स्थापना करना है—

ऋतावाना नि षेदतु: साम्राज्याय सुक्रतू। धृतव्रता क्षत्रिया क्षत्रमाशतु:॥
ऋ० ८.२५.८

नियमों का पालन करने वाले, सत्याचरण वाले क्षत्रिय सर्वप्रथम **क्षत्रमाशतु:** क्षात्र तेज प्राप्त करते हैं। वे शरीर की बल वृद्धि, संयम, सदाचार से युक्त और शस्त्रास्त्र एवं युद्धकला का प्रशिक्षण प्राप्त कर **साम्राज्याय निषेदतु:** साम्राज्य की स्थापना के लिये प्रयत्न करते हैं।

क्षत्रिय के कर्म—**प्रजानां रक्षणं दानमिज्याध्ययनमेव च। विषयेष्व प्रसक्तिश्च क्षत्रियस्य समासत:॥**
मनु० १.८९

न्याय से प्रजा की रक्षा करना, विद्या, धर्म की वृद्धि और सुपात्रों को दान देना, अग्निहोत्र करना, वेद का स्वाध्याय करना और विषयों में न फंसकर जितेन्द्रिय तथा शरीर-आत्मा से बलवान् रहना ये संक्षेप में क्षत्रिय के कर्म हैं। जो अपने मन एवं इन्द्रियों को वश में रखता है, वही साम्राज्य या चक्रवर्ती साम्राज्य की प्राप्ति में सफलता प्राप्त कर सकता है।

शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनम्। दानमीश्वरभावश्च क्षात्रकर्म स्वभावजम्॥ गीता १८.३॥

शूरवीरता—अकेला होने पर भी सैकड़ों के साथ युद्ध करने में समर्थ, सदा तेजस्वी—दीनता रहित, धैर्यवान् होना, राज और प्रजा सम्बन्धी व्यवहार और सब शास्त्रों में अति चतुर होना, रणभूमि में पीठ न दिखाना, दान शीलता और ईश्वरभाव अर्थात् पक्षपातरहित हो सबसे यथायोग्य व्यवहार करना ये गुण क्षत्रिय के हैं।

महाभारत शान्तिपर्व अध्याय ६० में क्षत्रिय का धर्म विस्तार से बतलाया है—**नास्य कृत्यतमं किञ्चिदन्यत् दस्यु निबर्हणात्।** दस्यु, लुटेरों को मारने से बढ़कर दूसरा कोई श्रेष्ठतम कार्य क्षत्रिय का नहीं है। क्षत्रिय इसीलिये शस्त्रास्त्र धारण करता है कि **नार्तनादो भवेदिति** किसी निरपराध का आर्तनाद न होने पाये। क्षत्रिय दान तो करे परन्तु किसी से दान नहीं ले। वह यज्ञ करे किन्तु किसी का पुरोहित बन यज्ञ न करवाये। वह अध्ययन करे किन्तु अध्यापक न बने। उसका मुख्य कार्य प्रजा का पालन करना है।

जो क्षत्रिय शरीर पर घाव हुये बिना ही समरभूमि से लौट आता है, विद्वान् लोग उसके इस कृत्य की प्रशंसा नहीं करते हैं। यद्यपि दान, अध्ययन और यज्ञादि के अनुष्ठान से भी राजाओं का कल्याण होता है तथापि युद्ध उनके लिये सबसे बढ़कर है। धर्म की इच्छा रखने वाले राजा को सदैव युद्ध के लिये उद्यत रहना चाहिये।

राजा का यह भी कर्त्तव्य है कि प्रजा को अपने-अपने धर्मों में स्थापित करके उनके द्वारा शान्तिपूर्ण समस्त कर्मों का धर्म के अनुसार अनुष्ठान कराये।

राजा दूसरा कर्म करे या न करे, प्रजा की रक्षा करने मात्र से वह कृतकृत्य हो जाता है। राजा द्वारा सुरक्षित प्रजा जब धर्माचरण करती है तो उसका छठा भाग राजा को भी प्राप्त होता है। - ***क्रमश:***

"शत हस्त समाहर सहस्त्र हस्त सं किर"
"सौ हाथों से कमाओ हजार हाथों से दान करो"

पीड़ितों की सेवा ही हम सबका राष्ट्रीय एवं धार्मिक कर्त्तव्य

आर्यजन दिल खोलकर दान दें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर उत्तराखण्ड बाढ़ पीड़ितों सहायतार्थ दान की अपील पर प्राप्त दान की सूची

गतांक से आगे -

आर्यसमाज शाहबाद मोहम्मदपुर द्वारा एकत्र

784	सर्वश्री वेद सैनी	500
785	रामकिशन	100
786	सूरत सैनी	500
787	नरेश भारल	101
788	सुनील लाम्बा	250
789	बलवान लाम्बा	250
790	सतीश लम्बा	500
791	कर्नल देवेन्द्र सहरावत	1100
792	जिले सिंह सोलंकी	2100
793	डॉ. जगराम यादव	1100
794	जगवीर सिंह	1100
795	महाशय ईश्वर सिंह	1100
796	श्रीमती सरला पांचाल	500
797	विजेन्द्र पांचाल	500
798	मामचन्द सोलंकी	1100
799	सोनू	1100
800	डॉ. बेदी	501
801	ओमवीर सोलंकी	1100
802	दिनेश शर्मा	100
803	सतप्रकाश राणा (विधायक)	5100
804	**श्री ईश्वर चन्द्र खन्ना**	**11000**
805	बाबूलाल जोशी (इन्दौर)	150
806	आर्यसमाज श्रीनिवासपुरी	11000
807	मनीष आर्य (लखनऊ)	1100
808	ओम प्रकाश अरोड़ा (नोएडा)	2500
809	अशोक कुमार	500
810	बलदेव राज महाजन(आर्यसमाज आर्य नगर पटपडगंज)	1000
811	राजकुमार श्रीवास्तव	1000
812	हंसराज वर्मा	1100
813	कमल गुप्ता	1530

- **क्रमश:**

इस मद में दान देने वाले दानी महानुभावों के नाम इसी प्रकार आर्य सन्देश के आगामी अंकों में भी प्रकाशित किये जाएंगे। - ***महामन्त्री***

पीड़ित निराश्रित बच्चों हेतु बनने वाले विद्यालय एवं छात्रावास के लिए बढ़-चढ़कर सहयोग करें

दानी सज्जन अपनी दान राशि निम्न बैंक खातों में जमा कराएं

'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' - खाता सं. 09481000000276
पंजाब एंड सिंध बैंक, IFSC - PSIB 0020948 MICR - 110023121

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' - खाता सं. 1098101000777
केनरा बैंक, IFSC - CNRB 0001098 MICR - 110015025

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' खाता सं. 910010008984897
एक्सिज बैंक, IFSC - UTIB0000223 MICR - 110211025

'आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड' - खाता सं. 0649201001 2620
ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स, देहरादून, IFSC - ORBC 0100 649

विशेष : जो सज्जन/संस्थाएं अपनी दान राशि पर आयकर छूट चाहते हैं वे अपनी राशि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम सभा के उपरोक्त बैंक खाते में जमा कराएं। कृपया अपनी दान राशि जमा करने के बाद तत्काल **मो. 9540040339 पर श्री विजय आर्य को सूचित** करके **aryasabha@yahoo.com** तथा **dapsvijayarya@gmail.com** पर डिपोजिट स्लिप ईमेल करें ताकि उन्हें रसीद भेजी जा सके।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के खाते में राशि जमा कराने वाले सज्जन कृपया अपनी दान राशि जमा करने के बाद तत्काल **मो. 9760195053 पर श्री पृथ्वीराज आर्य** को सूचित करें ताकि रसीद जारी की जा सके।

– विनय आर्य, महामन्त्री

वेदों में प्रतिपादित समाजवाद आदर्श समाज निर्माण का सर्वश्रेष्ठ सिद्धान्त

- डॉ. रघुवीर वेदालंकार

संसार में अनेक वाद प्रचलित हैं। इनमें आस्तिकवाद, नास्तिकवाद, एकेश्वरवाद, बहुदेव वाद, भोगवाद, त्यागवाद, साम्यवाद, समाजवाद इत्यादि। वेद इन सबकी उद्गम स्थली हैं पक्ष-विपक्ष के रूप में वहां इन सभी का चित्रण है। यहां पर हमारा विषय समाजवाद है। इसे प्रस्तुत लेख में यह प्रतिपादित किया जायेगा कि वेदों में किस प्रकार का समाजवाद प्रतिबिम्बित है। वेद व्यक्ति की अपेक्षा समाज को ही प्रमुखता देता है। यह समाज किस प्रकार सुखी-सम्पन्न तथा समभाव युक्त बने इस विषय में वेदों में निम्न विचार उपलब्ध हैं :-(1) **सर्वमङ्गल की भावना**- वेद सम्पूर्ण समाज के अभ्युदय की बात करता है। कर्त्तव्य के रूप में तो व्यक्तिगत स्तर पर एक वचन में भी करणीय कार्यों का उपदेश दिया गया है, किन्तु फल की दृष्टि से पूरे समाज को ही दृष्टि में रखा गया है। वेद के आरम्भ में ही हमें यह भावना दृष्टिगोचर हो जाती है। जैसे ऋग्वेद के प्रथम सूक्त के प्रथम मन्त्र में एक स्तोता 'अग्निमीडे' कहकर अग्नि के स्तवन की बात करता है, किन्तु इसी सूक्त के अन्तिम मन्त्र में पूरे 'स चस्वा नः स्वतये' कहकर सभी के लिए कल्याण की कामना की गयी है। इसी प्रकार एक अन्य सूत्र में समाज को दृष्टि में रखकर कहा गया है कि हे आर्य! हम सबको सुपथ पर ले चलों, कुटिल पाप से हमें बचा लीजिए तथा ऐश्वर्य प्राप्ति के लिए हमारा मार्गदर्शन करिए। इसी प्रकार सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय प्रार्थना 'ओम् आ ब्रह्मन ब्राह्मणो' (यज्ञ. 21/22) में भी अन्त में यही कहा गया है। 'योग क्षेमो नः कल्पताम्। पूरा समाज ही इस योगक्षेम का अधिकारी बने, अकेला व्यक्ति नहीं। इसी प्रकार अन्यत्र भी पदे पदे वेदों में 'व' तथा 'नः' के द्वारा सम्पूर्ण समाज के मंगल की ही कामना की गयी है।

(2) **समानता की भावना** - वेद समानता का प्रतिपादक है। इसी का नाम समाजवाद है- इसके अनुसार समाज में अधिकार तथा व्यवहार की दृष्टि से भेदभाव न हो। समानता की भावना के निम्न स्वरूप वेदों में प्राप्त होते हैं:-

(क) **जाति या धन आदि की दृष्टि में :**- वेद में जाति प्रथा है ही नहीं। वहां पर वर्ण की दृष्टि में चारों वर्ण समान मान वाले हैं। उनमें धन या वर्ण आदि के आधार पर कोई भी छोटा-बड़ा नहीं है जैसा कि वर्त्तमान समाज में देखा जाता है। वेद के अनुसार मानव मात्र परमेश्वर के पुत्र हैं। अतः सभी बराबर हैं तथा परस्पर बन्धु हैं। उनमें किसी प्रकार की ऊंच-नीच की भावना नहीं है। सभी मिलकर ऐश्वर्य प्राप्ति के लिए उद्यम करें।

(ख) **खान-पान की समानता :**- जब सभी मानव ऊंच-नीच के भेद से रहित होकर परस्पर समान हैं, तो उनमें वर्त्तमान में प्रचलित सवर्ण तथा दलित जैसे प्रथाएँ नहीं हैं। सभी मनुष्यों के खाने तथा जल आदि पीने के स्थान पृथक-पृथक न होकर सब के लिए समान है, क्योंकि वर्त्तमान समाज इन आधारों पर भी परस्पर विभक्त हैं, जो की असमानता का ही सूचक है।

(ग) **स्त्री-पुरुष समान :**- वेद में स्त्रियों के भी वे ही सभी अधिकार प्राप्त हैं जो कि पुरुषों के हैं। वह ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करके वेदाध्ययन भी करती हैं तथा गृहस्थ में पति की अर्धाङ्गिनी है। 'जायेदस्तम्' के द्वारा पत्नी को ही घर में सर्वप्रमुख बतलाया गया है। मध्यकाल में स्त्रियों के अधिकारों को कम कर दिया गया था। वर्त्तमान में स्त्रियों को यथार्थ पर्याप्त अधिकार प्राप्त है तथापि आरक्षण की मांग उठते रहना उनकी अधिकार न्यूनता का ही द्योतक है।

3. **सर्वप्रियत्व की भावना** - वैदिक समाजवाद का ध्येय है कि आपस में द्वेष न करके सभी जन परस्पर मैत्री की भावना में व्यवहार करें। वेद की दृष्टि तो इससे भी अधिक व्यापक है। वह तो पशु-पक्षियों तक का प्रिय होने का उपदेश देता है। वेद एक ऐसा व्यक्तित्व उपस्थित करता है जो ब्राह्मण, क्षत्रिय,वैश्य तथा शूद्र इन चारों वर्णो का प्रिय हो। आज समाज में जातियों आदि के अनेक रूपों में वर्ग संघर्ष उत्पन्न हो रहा है। ऐसे में वेदानुमोदित सर्वप्रियत्व की भावना ही समाज का कल्याण एवं रक्षा कर सकती है।

4. **सह अस्तित्व की भावना**-जब तक समाज सह अस्तित्व की भावना को नहीं अपनाएगा तब तक वह सुखी नहीं हो सकता। सह अस्तित्व तभी सम्भव है जबकि हमारे मानसिक नव, संकल्प तथा हृदय एक हों। उनमें परस्पर ईर्ष्या-द्वेष-द्रोह- अपकार इत्यादि दुर्गुण न हों। मनुष्य सामाजिक प्राणी है। वह परस्पर की सदृश्यता, सौहार्द तथा सामन्जस्य के बिना नहीं जी सकता। ..... समाज में अकेला चल कर न तो वह उन्नति कर सकता है न ही जीवित रह सकता है। समाज उसका रक्षक एवं शिक्षक है। इसलिए व्यक्ति को भी चाहिए कि वह भी समाज के वन्य प्राणियों की सेवा, सहायता किया करे। इसी अभिप्राय से वेद में 'विश्व भृतश्च' (यजु. 10/4) कहा गया है। अर्थात यह केवल अपना ही भरण-पोषण करने वाला न होकर समाज के अन्य घटकों का भी भरण पोषण करे। यही सामाजिक कर्त्तव्य है। न केवल भरण-पोषण करें अपितु अन्य सभी रूपों में वे एक-दूसरे की सहायता तथा रक्षा करें। वाणी से भी एक-दूसरे के लिए कल्याण का उपदेश दिया करे।

5.**कोई भी अभावग्रस्त न हो**- वैदिक समाजवाद में कोई भी व्यक्ति धनाभुव से पीड़ित नहीं हो सकता, न ही समाज का कोई भी प्राणी भूख से मर सकता है जैसाकि आजकल हो जाता है। यजुर्वेद में हर व्यक्ति के प्रति सजगता का स्पष्ट आदेश दिया गया है कि संसार के मानव मात्र को भोजन से तृप्त करो। ऐसे व्यक्ति को वेद में लोक कृत्, लोक कृत्नु तथा लोक सनि कहकर उसे यजनीय सम्माननीय तथा पूजनीय बतलाया गया है।

6. **चारों वर्ण परस्पर पूरक हैं**- सामाजिक अभाव को दूर करने के लिए ही वेद में चार वर्णों की अवधारणा है। ये चारों वर्ण परस्पर विरुद्ध न होकर एक-दूसरे के पूरक तथा सहयोगी हैं। संसार में चार प्रकार का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है- 1. ज्ञान, विज्ञान विद्या का अभाव 2. शक्ति या रक्षा का अभाव 3. धन-धान्य तथा अर्थ का अभाव। समाज के तीन वर्ण समाज के इन्हीं अभावों के पूरक हैं। ब्राह्मण का दायित्व अविद्या को नष्ट करके ज्ञान देना है। क्षत्रिय का दायित्व समाज के प्रत्येक प्राणी की रक्षा तथा वैश्व का दायित्व प्रत्येक प्राणी की सेवा करना है। अर्थात् समाज का हर व्यक्ति एक-दूसरे का पूरक बने। अतः शूद्र का कर्त्तव्य इन तीनों वर्णों की सेवा करना है।

7. **समाज में कोई भी भूखा-प्यासा न रहे**- समाज के प्रत्येक मनुष्य के पास समान सम्पत्ति नहीं हो सकती। धनी-निर्धन तो रहेंगे ही। यह भी सम्भव है कि एक व्यक्ति के पास असीमित धन-सम्पत्ति हो तथा दूसरे के पास भोजन तथा निवास का भी प्रबन्ध न हो। ऐसी स्थिति में समाज में विषमता उत्पन्न होगी ही। इसका समाधान दो ही प्रकार से हो सकता है। प्रथम यह कि धनवान व्यक्ति स्वेच्छा से निर्धनों को धन तथा भोजनादि प्रदान करे, जिससे कि वे भी जीवित रह सकें। यदि ऐसा नहीं होता तो दूसरा मार्ग यही है कि निर्धन वर्ग जबरदस्ती से धनिक वर्ग से धन छीन ले। यह दूसरा रास्ता समाज में हिंसक वृत्ति को बढ़ाकर परस्पर शत्रुता तथा कलह कराने वाला है। वर्तमान समय में साम्यवादी यही मार्ग अपनाते हैं किन्तु इससे शान्ति नहीं हो सकती। इसीलिए वेद में प्रथम मार्ग का ही उपदेश दिया गया है कि समाज का प्रत्येक धनी व्यक्ति निर्धनों को अन्न-धन आदि प्रदान करे। ऋग्वेद में अति स्पष्ट शब्दों में कहा गया है अकेला खाने वाला पापी है इसलिए बांटकर खाना चाहिए। इससे समाज का कोई भी प्राणी भूखा-प्यासा नहीं रहेगा। वेद कहता है कि अन्यों को भोजन तथा दान देने वाला व्यक्ति कभी न तो व्यथित होता है न ही उसका धन देने से कम होता है। वह समस्त सुखों को प्राप्त करता है। आवश्यकता पड़ने पर उसके पास पर्याप्त धन हो जाता है।

जो व्यक्ति इस प्रकार अन्यों में बांट कर सम्पत्ति का उपभोग करता है, वेद की दृष्टि में वह आदर का पात्र है। उसके लिए कहा गया है- विभक्तारं हवामहे वसोश्चित्रस्य

- शेष पृष्ठ 6 पर

आर्यसमाज के गीतों को बनाएं अपनी मोबाइल ट्यून (CallerTunes)

आर्यसमाज के गीतों को अपनी मोबाइल ट्यून बनाने के लिए आज ही डाउनलॉड करें और अन्य महानुभावों को भी प्रेरित करें।

Sr.	Song Title	Voda	Idea	Airtel	Tata CDMA	Tata Doco	BSNL (North)	MTS
1	आई फौज दयानन्द वाली	10444132	720080	543211007382	376609	254930	173340	77772509
2	ये प्रभु हम तुम से	10444133	720084	543211007383	376614	254931	173341	77772510
3	होता है सारे देश का	10444134	720081	543211007384	376615	254932	173342	77772511
4	हम को सब दुनिया जाने	10444135	720082	543211007385	376616	254933	173343	
5	जो होली सो होली	10444136	720090	543211007386	376622	254934	173344	77772512
6	पूजनीय प्रभु हमारे	10444137	720105	543211007387	376629	255260	173345	77772513
7	सुनो-सुनो ये दुनिया वालो	10444138	720115	543211007388	376639	254935	173346	77772514
8	यूँ तो कितने ही महापुरुष	10444139	720111	543211007389	376644	254936	173347	77772515
9	दिल्ली चलो (सम्मेलन गीत)			543211462723			1721306	

Voda- SMS "CT code"send to 56789 Idea- SMS "DT Code"send to 55456 Airtel- Dial Code and Say " YES" Tata cdma- SMS "Wtcode" send to 12800 Tata docomo- SMS "CT code" to 543211 BSNL- SMS "BT code" send to 56700 MTS- SMS "CT code" send to55777

उदाहरण के तौर पर आपके पास Idea का कनेक्शन है और आप "Aai Fauj Dayaanand Wali" गीत की धुन अपने Idea मोबाईल पर कॉलर ट्यून बनाना चाहते हैं, तो आप गीत के DT 720080 को टाईप कर इस नंबर 55456 पर एसएमएस करें।

प्रथम पृष्ठ का शेष

घोर अन्धकार ने सारे देश पर अधिकार जमा लिया। इन मत-मतान्तरों के कारण ज्ञान व विज्ञान की उन्नति में बाधा आयी और हम विज्ञान से वंचित हुए। दूसरा प्रमुख कारण है कि हमारे ब्राह्मण वर्ग ने स्त्रियों व शूद्रों को शिक्षा की प्राप्ति अर्थात् अध्ययन-अध्यापन से वंचित कर दिया जिससे समाज का 75 से 80 प्रतिशत भाग अशिक्षित रहने के कारण ज्ञान का विकास होने के स्थान पर दिन-प्रतिदिन ह्रास होता गया।

हमारे यूरोप के बन्धु धर्म-कर्म को छोड़कर ज्ञान- विज्ञान की उन्नति में लग गये और लगभग डेढ़-दो शताब्दियों में ज्ञान-विज्ञान को शिखर पर पहुंचा दिया। हम समझते हैं कि सारा संसार उन बुद्धिजीवी विज्ञानियों का सदैव आभारी है और रहेगा। हमने पहले भी कहा है कि ज्ञान व विज्ञान का आधार भाषा है। यूरोप की भाषा वहां के वैज्ञानिकों ने नहीं बनाई। उनके समय में प्रयोग की जा रही भाषा वहां पहले से प्रचलित भाषाओं की रूपान्तरित अवस्था थी। जिन भाषाओं से वह रूपान्तरित हुई, वह भाषा व भाषायें भी अपने से पूर्व प्रचलित भाषाओं के आधार पर अस्तित्व में आई और पीछे चलते-चलते हम सृष्टि के आरम्भ में पहुंचते है जब ईश्वर ने मनुष्यों को उत्पन्न किया था। सृष्टि के आरम्भ काल में ईश्वर से अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न मनुष्यों के सामने सबसे पहली समस्या भाषा की हो सकती थी। बिना भाषा के बोला नहीं जा सकता। भाषा के बिना सोचा ही नहीं जा सकता क्योंकि सोचने या विचार करने के लिए भी भाषा की आवश्यकता होती है। सोचना पहले होता है और बोलना बाद में। अत: जब सोचना ही नहीं होगा तो भाषा बोलने या बनाने का काम मनुष्यों के लिए सर्वथा असम्भव है। हर चीज अपने कारणों से बनती है। कारण से कार्य होता है व हर कार्य का कारण अवश्य होता है। भाषा का कारण क्या हो सकता है तो पता चलता है कि भाषा का कारण अर्थात् बनी बनाई भाषा मनुष्यों को देने वाली कोई चेतन सत्ता ही हो सकती है। मनुष्य वा मनुष्येत्तर पशु, पक्षी आदि प्राणी भाषा का निर्माण कर नहीं सकते फिर अन्य कारण क्या बचता है? वह चेतन कारण वही है जिसने इस सृष्टि को रचा है, जल-थल व नभ को बनाया है व वायु को बहाया है। वनस्पतियां बनाई और हम मनुष्यों को भी बनाया था और आज भी बना रहा है। आज के वैज्ञानिक भी मनुष्य के निर्माण व रचना के विज्ञान को पूरी तरह समझ नहीं सके, बनाना तो बहुत दूर की बात है। यह सुस्पष्ट सिद्धान्त है कि कोई भी बुद्धिपूर्वक रचना किसी न किसी चेतन सत्ता द्वारा ही होती है। जड़ पदार्थों से किसी बुद्धिपूर्वक रचना का होना सम्भव नहीं है। इससे सिद्ध होता है कि भाषा को भी उसी चेतन तत्त्व ने बनाया है जिसने मानव शरीर व इसमें आंख, नाक, कान, मुख, जिह्वा, दांत, गला, उदर, वाणी-यन्त्र बनायें हैं एवं शब्दोच्चार की क्षमता व शक्ति प्रदान की है। वह भाषा ईश्वर से वेदों के ज्ञान के साथ हमारे चार ऋषियों, अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को प्राप्त हुई थी। उन्होंने उसका प्रचार व शिक्षण किया जिससे वह सर्वत्र फैल गई और समय-समय पर देश व काल के प्रभाव से परिवर्तित होती रहीं। कहीं उसने हिन्दी का, कहीं अंग्रेजी का, कहीं रूसी व कहीं चीनी का तथा कहीं अरबी, फारसी व उर्दू का रूप ले लिया। यह परिवर्तन कई-कई शताब्दियों में हुआ करते हैं। भाषा प्रदान करने व सृष्टि को बनाने वाली वह चेतन सत्ता ईश्वर है और उसका स्वरूप देश-विदेश में अस्तित्व में आये मानव निर्मित मत-मजहब-सम्प्रदाय या धर्म में विहित विचारों के अनुरूप न होकर उनसे भिन्न व पृथक है। वह चेतन सत्ता और उसका स्वरूप वस्तुत: सृष्टिकर्ता, मनुष्यों व सभी प्राणियों का जनक या माता-पिता, सबका आदि गुरू, निराकार, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, सत्य, चित्त व आनन्दस्वरूप, न्यायकारी दयालु, अजन्मा, अविनाशी, अजर, अमर, अभय, पवित्र आदि है जिसकी संज्ञा ईश्वर है। हमारे इस विवेचन का उद्देश्य यह बताना है कि हमारे सभी वैज्ञानिक विज्ञान की खोज जिस भाषा में भी करें, उसका आदि कारण ईश्वर प्रदत्त वेदों की भाषा है जो संस्कृत के समान प्राय: है। हम यह बताना चाहते हैं कि सारी दुनियां को भाषा भारत से मिली है। अत: सारी दुनियां के मत-मजहब व सम्प्रदाय भाषा के मामले में ईश्वर के बाद हमारे देश के प्राचीन ऋषि-मुनियों के ऋणी हैं। दूसरी महत्त्वपूर्ण बात हम देखते है कि यूरोप के वैज्ञानिक प्रचलित मत-मजहब-सम्प्रदाय तथा धर्म आदि के चक्रव्यूह में फंसे नहीं और पूरी निष्ठा व समर्पण से विज्ञान की सेवा की जिसका परिणाम वर्तमान की उपलब्धियां हैं।

हमारे इन वैज्ञानिक बन्धुओं की उपलब्धियों से अन्ध-विश्वासों, अज्ञान व कुरीतियों में निष्ठा रखने वाले मत-मतान्तरों के व्यक्ति भी लाभान्वित हो रहे हैं। अत: अब तक हुई सभी प्रकार की विज्ञान की उन्नति का श्रेय यूरोप के वैज्ञानिकों को है जिन्होंने अन्ध-विश्वासों में फंसे बिना स्वतन्त्र सोच से अपना कार्य किया। महाभारत काल के बाद हमारे आर्यावर्त भारत में स्वतन्त्र सोच व निष्ठा की कमी व अन्धविश्वास, कुरीतियां व अज्ञान आदि का प्राबल्य वैज्ञानिक प्रगति में मुख्य रूप से बाधक रहा।

एक प्रश्न यह भी उठता है कि विगत लगभग 200 वर्षों में विज्ञान ने कल्पनातीत विकास, उन्नति या विस्तार किया है तो फिर विगत लगभग 1.96 अरब वर्षों में विज्ञान ने यह ऊचाइयां प्राप्त क्यों नहीं की? हम देखते हैं कि महाभारत काल के बाद देश एवं विश्व में ज्ञान का पराभव हुआ। महाभारत काल में तो आज से भी अधिक ज्ञान-विज्ञान व विद्यायें होनी चाहिये थी जिसका कारण एक ओर 1.96 अरब वर्षों का समय मिला जबकि दूसरी आधुनिक विज्ञानियों ने मात्र 200 वर्षों के समय में विज्ञान को वर्तमान शिखर तक पहुंचा दिया। सम्प्रति जो जानकारियां या प्रमाण उपलब्ध हैं उनसे यह पता नहीं चलता कि महाभारत काल व उससे पूर्व आज से अधिक ''विज्ञान'' विकसित था। जितने बड़े विमान आज हैं, रेलगाड़िया व कम्प्यूटर, दूरदर्शन, मोबाइल फोन, अन्तरिक्ष यान, मिसाइलें, तथा पृथिवी के कृत्रिम उपग्रह आदि हैं, उनका अस्तित्व महाभारत काल व उससे पूर्व भी था, इसका कोई प्रमाण किसी के पास नहीं है। जो भी हो, यूरोप के वैज्ञानिक सारी दुनियां के लोगों से बधाई व प्रशंसा के पात्र हैं।

महाभारत काल के बाद पतन का काल आरम्भ हुआ। मूर्तिपूजा, अज्ञान, कुरीतियां, मृतकों का श्राद्ध, बाल विवाह, विधवा विवाह पर प्रतिबन्ध, नियोग प्रथा की समाप्ति, वर्णव्यवस्था की समाप्ति व जन्म पर आधारित जाति व्यवस्था का आरम्भ, स्त्रियों व शूद्रों के अध्ययन अध्यापन पर प्रतिबन्ध, यज्ञों में हिंसा, मांसाहार, सुरापान का प्रचलन आदि अनेक बुराइयां समाज में प्रचलित हुई। यद्यपि इस बीच देश में भगवान, बुद्ध, भगवान महावीर व स्वामी शंकराचार्य जैसे प्रकाण्ड विद्वान व धर्म संशोधक हुए , परन्तु देश का पराभव चलता रहा। ईश्वर, जीवात्मा व जड़ प्रकृति के वास्तविक स्वरूप को

- शेष पृष्ठ 7 पर

अनोखे शिष्य : भाई परमानन्द जी

सन् 1905 में महात्मा हंसराज जी ने अपने कॉलेज के एक होनहार प्राध्यापक महोदय को धर्म-प्रचार के निमित्त पूर्वी अफ्रीका भेजा था। वहाँ जाते ही वे अपने काम में जुट गए।

मैरिटजबडी (अफ्रीका) में कई लोग इन प्राध्यापक महोदय के मित्र बन गए। वे सभी उन्हें 'भाई जी' कह कर पुकारा करते थे।

एक दिन 'भाई जी' सैर को निकले। उनके साथ कोई भी न था, अकेले ही थे। पर्याप्त समय बीत जाने पर भी वे लौटे नहीं। ऐसे में उनके सहयोगियों का चिन्तित होना स्वाभाविक था। वे अलग-अलग दिशाओं में उन्हें ढूँढने निकले। उनमें से एक का नाम था श्री जी॰ विलियम्ज्।

'भाई जी' को ढूँढते-ढाँढते वे पास वाले एक जंगल में जा पहुँचे। कई हब्शी लोग वहाँ अपनी झोपड़ियों में रहते थें। एक झोपड़ी के सामने कई-सारे हब्शी भीड़ लगाए खड़े थे। श्री विलियम्ज् भी वहीं चले गए। वहाँ खड़े एक बूढ़े से उन्होंने उस भीड़ का कारण पूछा।

उस हब्शी ने हँसते हुए कहा "अंदर चले जाओ सब पता चल जाएगा।"

श्री विलियम्ज् झोपड़ी के अन्दर चले गए। वहाँ 'भाई जी' को एक ऊँचे मूढ़े पर बिठाए, कई सारे बूढ़े हब्शी उन्हें घेरे खड़े थे। उन्हें कुछ भी समझ न आ रहा था। उनके पूछने पर एक बूढ़ा बोल उठा, "ये हमारे देवता है।"

"सो कैसे?" विलियम्ज् ने पूछा था।

"यहाँ की एक लड़की ने अपने घर से कुछ चुरा लिया था। इससे पहले भी वह कई चोरियां कर चुकी थी। उसकी माँ ने उससे छुटकारा पाने की सोची। उसने उसे एक पेड़ के साथ बाँध दिया। वह इसे जलाकर मार डालना चाहती थी। वह औरत अपनी झोपड़ी से कुछ लेने चली गई। इधर, यह लड़की रोने-चिल्लाने लगी।

"तभी ये देवता जी वहाँ आ गए। इन्होंने लड़की की रस्सियाँ खोल दीं। उसकी जगह स्वयं को पेड़ से बंधवा लिया। हमने इन्हें देखा तो दंग रह गए। तभी उस लड़की की माँ वहाँ आई। उसी ने हमें सारी बात बताई। इन्होंने उस लड़की की जान बचाई व स्वयं को मरने हेतु प्रस्तुत किया। हुए न यह हमारे देवता।"

इस घटना से प्रेरित होकर श्री विलियम्ज् ने वैदिक धर्म ग्रहण किया था। यह करामात थी हमारे 'भाई जी' की। उनका पूरा नाम था- भाई परमानन्द जी। वे महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के परम शिष्यों में से एक थे। उन्होंने आर्यसमाज हेतु अपना सर्वस्व न्यौछावर करने की ठानी थी। देश की स्वतंत्रता हेतु उन्होंने अपनी जान तक की बाजी लगा दी। उन्होंने जो पीड़ाएँ यातनाएँ, कष्ट आदि सहे, उन्हें पढ़कर/सुनकर ही रौंगटे खड़े हो जाते हैं। युवा क्रान्तिकारी करतार सिंह सराबा उन्हें अपना गुरु मानते थे। लाला लाजपत राये, श्याम जी कृष्ण वर्मा, वीर सावरकर, शहीद भगत सिंह आदि सरीखे अनेकानेक क्रान्तिकारी वीर उनकी देश-भक्ति का लोहा मानते थे। शत-शत प्रणाम हैं उन्हें।

- सुखदेव मल्होत्रा
634-बी, श्रीनगर कॉलोनी,
शकूरबस्ती, दिल्ली-110034

।। ओ३म्।।
गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार

गुरुकुल के आयुर्वेदिक उत्पाद खरीदें
गुरुकुल परम्परा को आगे बढ़ाएँ
गुरुकुल चाय, पायोकिल, च्यवनप्राश, मधुमेह नाशिनी, मधु (शहद), ब्राह्मी रसायन, आंवला रस, गुरुकुल शिलाजीत, द्राक्षारिष्ट, रक्त शोधक, अश्वगंधारिष्ट
गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार, पो. गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) -249404
फोन - 0134-416073, 09719262983 (व्यावसायिक)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के निर्देशन में
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित

6-7वां आर्य परिवार विवाह योग्य युवक-युवतियों के परिचय सम्मेलन

19 जनवरी, 2014 : आर्यसमाज मल्हारगंज, इन्दौर (म.प्र.) | **2 फरवरी, 2014 : आर्यसमाज डी ब्लाक विकासपुरी, दिल्ली**

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) द्वारा आयोजित आरम्भ किए गए आर्य परिवार विवाह संयोग सेवा के छठवें परिचय सम्मेलन के लिए पंजीकरण आरम्भ हो गए हैं। **यह सम्मेलन रविवार, 19 जनवरी 2014 को प्रात: 10 बजे आर्य समाज मल्हार गंज इन्दौर (म.प्र)** में आयोजित किया जाएगा। दिल्ली में सातवां आयोजन 2 फरवरी, 2014 को होगा। अत: जो आर्य महानुभाव विवाह योग्य अपने पुत्र/ पुत्रियों का पंजीकरण कराना चाहते हैं, वे पंजीकरण फार्म सभा कार्यालय से मंगा सकते हैं अथवा सभा की वैबसाइट www. thearyasamaj.org से डाउनलोड कर सकते हैं। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम **200 रुपये (दो सौ रुपये) का डिमांड ड्राफ्ट** संलग्न कर **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1'** के पते पर भेज दें।

जिन आर्य बन्धुओं के आवेदन पत्र **(इन्दौर हेतु) 1 जनवरी, 2014** तथा **दिल्ली हेतु 15 जनवरी, 2014** तक हमारे कार्यालय में प्राप्त हो जाएंगे उनके ही परिचय आर्य युवक-युवती परिचय दिग्दर्शिका में प्रकाशित हो सकेंगे।

निवेदक
राष्ट्रीय संयोजक
श्री अर्जुनदेव चड्ढा
(09414187428)

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले मात्र 400/-रु. सैकड़ा | बिना सिक्के मात्र 300/-रु. सैकड़ा

नेमस्लिप्स

विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को महर्षि दयानन्द जी के बारे में जानकारी देने तथा उन्हें आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने की छोटी सी शुरुआत : कापी-किताबों पर चिपकाने के लिए नेमस्लिप्स। 21 स्लिप्स का एक सैट मात्र 10/- रुपये प्रति शीट।

प्राप्ति हेतु संपर्क करें।
-: प्राप्ति स्थान : -
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड,नई दिल्ली
फोन : 011-23360150
मो. 9540040339

पंजीकरण संख्या : ।। ओ३म्।। रसीद संख्या :

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित

आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सम्मेलन कार्यालय : 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली -110001 दूरभाष :- 011-23360150, 23365959,
Email: aryasabha@yahoo.com web : www.thearyasamaj.org IVRS No. -011-23488888

पंजीकरण प्रपत्र

"आवेदक अपना फोटो अनिवार्य रूप से लगाएं।"

: व्यक्तिगत विवरण :

1. युवक/युवती का नाम :.....गौत्र.....
2. जन्मतिथि:..... स्थान : .....समय :.....
3. रंग..... वजन ..... लम्बाई.....
4. योग्यता (शैक्षणिक एवं अन्य) : .....
5. युवक/युवती सेवारत, व्यवसाय में है तो उसका विवरण/ पता ..... मासिक आय .....

: पारिवारिक विवरण :

6. पिता/संरक्षक का नाम ..... व्यवसाय: ..... मासिक आय.....
7. पूरा पता: .....
   दूरभाष :..... मोबा :..... ईमेल: .....
8. मकान निजी/किराये का है.....
9. माता का नाम :..... शिक्षा :..... व्यवसाय : .....
10. भाई: विवाहित ..... अविवाहित: ..... बहन : विवाहित ..... अविवाहित :.....
11. उम्मीदवार/अभिभावक किस आर्यसमाज के सदस्य हैं? .....
12. युवक/युवती कैसी चाहिए (संक्षिप्त टिप्पणी दें) .....
13. युवक/ युवती यदि इनमें से हो तो सही पर (✔) लगाएं : विधुर : ☐ विधवा: ☐ तलाकशुदा: ☐ विकलांग: ☐
14. विशेष: किसी और बात का उल्लेख करना चाहते हों तो उसे यहां संक्षेप में लिखें:.....

दिनांक : ..... पिता/संरक्षक के हस्ताक्षर

नोट:1. कृपया इस फार्म के साथ निर्धारित रजिस्ट्रेशन शुल्क रु. 400/- (इन्दौर तथा दिल्ली में आयोजित दोनों सम्मेलनों हेतु) अथवा 200/- (इन्दौर या दिल्ली में आयोजित किसी एक सम्मेलन हेतु) का ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा भेजने का कष्ट करें। अथवा **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा** के नाम **एक्सिस बैंक खाता सं. 910010001816166** करोल बाग शाखा में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेजें। **परिचय सम्मेलन दिनांक 19 जनवरी 2014 (रविवार)को आर्यसमाज मल्हारगंज इन्दौर (म.प्र.) तथा 2 फरवरी, 2014 रविवार को आर्यसमाज विकासपुरी डी ब्लाक, नई दिल्ली में सम्पन्न होंगे।** कृपया सही (✔) का निशान लगाएं।
☐ इन्दौर में (200/-) ☐ दिल्ली में (200/-) ☐ दोनों में (400/-)

2. विक्लांग युवक-युवतियों तथा विधवा एवं तलाकशुदा युवतियों के लिये रजिस्ट्रेशन शुल्क में 50% छूट होगी।
3. विवाह सम्बन्ध बनाने से पूर्व दोनों पक्ष अपनी सन्तुष्टि कर लें। सभा इसके लिए उत्तरदायी नहीं होगी।
4. आप इस फार्म को www.thearyasamaj.org से डाउनलोड कर भेज सकते हैं। फोटो कॉपी प्रति भी मान्य है।
5. पंजीकरण के लिए फार्म केवल दिल्ली सम्मेलन कार्यालय में ही भेजे जाएं।
6. माता-पिता/अभिभावक रजिस्ट्रेशन शुदा पुत्र/पुत्री को सम्मेलन में अवश्य लावें। **कॉलम नं. 11 भरे बिना फार्म स्वीकार्य नहीं होगा।**

युवक और युवतियां परस्पर एक-दूसरे के गुण-कर्म और स्वभाव मिलने पर ही विवाह करें - *महर्षि दयानन्द सरस्वती*

शोक समाचार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व मन्त्री

डॉ. सच्चिदानन्द शास्त्री नहीं रहे

आर्य जगत के विद्वान, वरिष्ठ आर्य नेता, हैदराबाद सत्याग्रह के सैनानी, आर्यसमज की सर्वोच्च शिरामणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली की वर्षों तक मन्त्री के रूप में सेवा करने वाले डॉ. सच्चिदानन्द शास्त्री जी का दिनांक 30 अक्तूबर, 2013 को मध्यरात्रि आर्यसमाज गणेशगंज लखनऊ में निधन हो गया। वे लगभग 90 वर्ष के थे। उनका अन्तिम संस्कार उनके पैत्रक निवास ग्राम सुरसा, हरदाई में 31 अक्तूबर को पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित हैदराबाद सत्याग्रह स्मृति इदिवस समारोह में डॉ. सच्चिदानन्द जी का विशेष सम्मान किया गया था। श्री शास्त्री जी के निधन से आर्यसमाज अपूर्णिय क्षति हुई है।

श्री हरि ओम सिंह आर्य का निधन

आर्यसमाज मन्दिर खजूरी खास दिल्ली-94 के कर्मठ कार्यकर्ता एवं ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त, एवं समाज के मंत्री श्री हरिओम सिंह आर्य का 2 नवम्बर 2013 को हृदय गति रुक जाने के कारण निधन हो गया है। उनकी अन्त्येष्टि वजीराबाद श्मशान घाट पर रात्रि 8 बजे पण्डित ओमप्रकाश शास्त्री जी द्वारा वैदिक मन्त्रोच्चारण के बीच सम्पन्न हुई।

श्री हरिओम आर्य को भ्रातृशोक

आर्यसमाज मंगोलपुरी नई दिल्ली श्री हरिओम आर्य जी के भाई श्री त्रिलोकचन्द का दिनांक 1 नवम्बर, 2013 प्रात: 8:30 बजे आकस्मिक निधन हो गया।

अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से आचार्य आनन्द प्रकाश, आचार्य सुरेन्द्र शास्त्री एवं आचार्य रामनिवास शास्त्री द्वारा बुद्ध विहार श्मशान घाट पर कराया गया। इस अवसर पर वेद प्रचार मण्डल उ. पश्चिमी के महामंत्री श्री जोगेन्द्र खट्टर, आर्यवीर दल दिल्ली के पूर्व संचालकश्री वीरेन्द्र आर्य, श्री सुभाष आर्य, आर्यमुनिजी एवं अनेक आर्य समाजों विशेष गणमान्य लोगों पहुंचकर उन्हें विदाई दी।

श्री अरुण खोसला का निधन

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व कार्यालय मन्त्री श्री अरुण खोसला जी का गत दिनों दुखद निधन हो गया। श्री खोसला जी आर्य प्रतिनिधि सभा छत्तीसगढ़ एवं सार्वदेशिक सभा के सभी कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेते थे। सार्वदेशिक सभा की बैठकों में उनकी हमेशा उपस्थिति उनका विशेष गुण था। 36गढ़ सभा के मुकदमों में सक्रियता से भाग लेना अपनी मख्य जिम्मेदारी समझते थे। उनकी लग्नशीलता व मृदुभाषिता के लिए उन्हें सदैव स्मरण किया जाएगा।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

पृष्ठ 3 का शेष

राधस: (यजु. 30/4) वेद में एक अन्य दृष्टि यह भी है कि यदि व्यक्ति स्वयं इस प्रकर दानशीलता को अपनाकर समाज की सहायता नहीं करता तो राजा को चाहिए कि ऐसे कपटी व्यक्तियों के धन को प्रजा में बांट दे। यह अधिकार केवल राजा को दिया गया है, सभी मनुष्यों को नहीं। राजा को यह ध्यान रखना चाहिए कि प्रजा वर्ग में अयाज्ञिक वृत्ति वाला कौन व्यक्ति है तथा कौन धनाभाव से ग्रस्त है। यदि धनी व्यक्ति स्वयं न दे तो राजा उसके धन को अभावग्रस्त प्रजा में बांट दे। इस प्रकार यह समाजवाद का आदर्श स्वरुप है। इस याज्ञिक अर्थात् दानवृत्ति को अपनाकर जहां एक ओर अभावग्रस्त की रक्षा होगी, वहां दूसरी ओर दाता को इसका धर्मलाभ भी मिलेगा।

इस प्रकार विश्व का प्रत्येक मानव वैदिक समाजवाद की परिधि में आ जाता है। वेद समान रूप में मानव मात्र के कल्याण तथा उत्थान की बात सोचता है। किसी वर्ग विशेष की नहीं। वेदों में कहे गये वैयक्तिक तथा सामाजिक अधिकार एवं कर्त्तव्य सभी के बराबर हैं। इसमें किसी प्रकार का भेद नहीं है। सामाजिक उत्थान तभी हो सकता है जब व्यक्ति में दान, परोपकार, बन्धुत्व आदि की वृत्ति जगे, किसी भय अथवा नियम के कारणवश ही वह उसे करने में बाध्य न हो। वैदिक समाजवाद का यह आदर्श रूप है।

अम्बाला के सनातनधर्म इंटर कॉलेज और सेंट्रल जेल में हुए सिद्धान्त विषयक उपदेश

२४ से २७ अक्टूबर तक आर्यसमाज रामनगर अम्बाला छावनी का २२वां वार्षिकोत्सव सामवेद पारायण यज्ञ (आंशिक) के माध्यम से मनाया गया। यज्ञ के ब्रह्मा होशंगाबाद मध्य प्रदेश के आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी थे जिन्होंने प्रतिदिन मन्त्रों की मार्मिक व्याख्या के माध्यम से वैदिक सिद्धांतों को स्पष्ट किया। भजनोदेशक श्री संदीप वैदिक मुजफ्फरनगर ने सारगर्भित व्याख्या व मधुर भजनों से सभी का मन मोह लिया। प्रतिदिन प्रात:काल व सायंकाल यज्ञ भजन प्रवचन होते रहे। सैन्ट्रल जेल अम्बाला में १३०० कैदी है जिनमे ७० महिलाएं भी है। अंतिम दिन पुर्णाहुती पर स्थानीय आर्यसमाजों से भी आर्य परिवार आये थे। स्कूल के बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रम रखे गए। - ***कृष्ण कुमार, मंत्री***

आर्यसमाज निर्माण विहार का
28वां वार्षिकोत्सव
14 से 17 नवम्बर, 2013
चतुर्वेद यज्ञ : प्रात: 7:30 से 9 बजे
वेदकथा व ब्रह्मा : डॉ. दिनेश चन्द्र
भजन : श्री दिनश जी
पूर्णाहुति एवं आर्य सम्मेलन
17 नवम्बर, 2013
मुख्य वक्ता : ब्र. राजसिंह आर्य
अध्यक्षता : श्री प्राणनाथ कुमार
- ***रवि बहल, मन्त्री***

आर्यसमाज नोएडा का
भव्यं वार्षिकोत्सव
18 से 22 दिसम्बर, 2013
वेद कथा : आचार्य सोमदेव शास्त्री
भजन : श्री पं. घनश्याम प्रेमी
महिला एवं बलिदन सम्मेलन
22 दिसम्बर, 2013
- ***कै. अशोक गुलटी, मन्त्री***

सार्वजनिक सूचना

समस्त आर्यसमाजों, शिक्षण संस्थाओं आर्यसमाजी प्रतिष्ठानों एवं विशेष व्यक्तियों के सम्बन्ध में जानकारियां एकत्र करने के लिए सभा की ओर से **श्रीमती मीनू बत्रा** को आउटसोर्सिंग की गई है। वे आपको मो. नं. **9650183335** से फोन करके जानकारियां देने के लिए निवेदन करेंगी। आपसे निवेदन है कि आप मांगी गई सूचनाएं उलब्ध कराने का कष्ट करें। प्राप्त सूचनाओं को सभा के आई.वी.आर. सिस्टम में जन-साधारण की जानकारी के लिए दर्ज किया जाएगा। सभा का आई.वी.आर.एस. नं. 011-23488888 है।- **विनय आर्य, महामन्त्री**

आवश्यकता है

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) को निम्न पदों के लिए आवश्यकता है-

1. हिन्दी प्रूफ रीडर जो प्रूफ रीडिंग के साथ-साथ सम्पादन कार्य में भी रूचि रखते हों। हिन्दी-अंगेजी दोनों की योग्यता वालों को प्राथमिकता।

2. साहित्य प्रचारक जो विभिन्न पुस्तक मेलों में जाकर वैदिक साहित्य का प्रचार-प्रसार कर सकें एवं स्टाल पर आने वाले जिज्ञासु को सन्तुष्ट कर सकें।

3. सेल्समैन - जो सभा द्वारा प्रकाशित साहित्य को जहां-तहां विक्रय कर सके तथा विक्रय हेतु आर्डर ला सके।

4. प्रबन्धक जो आर्यसमाज के धार्मिक कार्यक्रमों को टी.वी. पर प्रसारित कराने का कार्य कर सके।

5.उपदेशक/प्रचारक/ भजनीक : सभा के वेद प्रचार विभाग के लिए **उपदेशक, प्रचारक एवं भजनोपदेशकों** की की भी आवश्यकता है।

सभी पदों के लिए गुरुकुलीय पृष्ठभूमि के उम्मीदवारों को वरीयता दी जाएगी। सभी पद पूर्णकालिक हैं। सम्बन्धित क्षेत्र से सेवानिवृत्त भी आवेदन कर सकते हैं। इच्छुक आवेदक अपना बायोडाटा निम्न पते पर भेजें/ ईमेल करें।

महामन्त्री
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.)
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
मो. 9958174441
Email:aryasabha@yahoo.com

स्वाध्याय के लिए पढ़ें

वैदिक विनय

मात्र 125/- रुपये

पृष्ठ 4 का शेष

महर्षि दयानन्द का संसार ...

भुला दिया गया और उसके स्थान पर अज्ञान परोसा जाने लगा। भारत में अज्ञान का अन्धकार छाया तो सारी दुनिया मे भी यही स्थिति पैदा हुई। इस कारण पारसी मत, यहूदी मत, ईसाई मत व इस्लाम मत का प्रादुर्भाव हुआ। इन मतों में ईश्वर, जीवात्मा व सृष्टि के सम्बन्ध में जो मान्यतायें हैं उन्हें वेदों से भिन्न, असत्य या अयथार्थ कह सकते हैं। ईश्वर व जीव के अविनाशी, अजन्मा, अमर व नित्य स्वरूप को पूरी तरह से भुला दिया गया। वेदों का स्थान पुराणों ने ले लिया। पुनर्जन्म का सिद्धान्त भी आधा अधूरा यत्र तत्र दृष्टिगोचर होता है। मूर्तिपूजा, अवतारवाद, अशिक्षा, फलित ज्योतिष, यज्ञों में हिंसा, बाल विवाह आदि कारणों से देश पहले यवनों का तथा उसके बाद अंग्रेजों का गुलाम हो गया। इस अवधि में देशवासियों ने असीम दुःखों व अपमान को सहन करना पड़ा। यथार्थ व सत्य वैदिक धर्म व संस्कृति का प्रायः लोप हो चुका था। यदि कहीं प्रचार था तो असत्य मत व मूर्तिपूजा आदि वेद विरूद्ध मान्यताओं व सिद्धान्तों का जिससे देश व समाज दिन-प्रतिदिन कमजोर हो रहा था। यद्यपि यूरोप व अन्य देशों के जो मत-सम्प्रदाय थे उनका स्वरूप भी भारतीय अवैदिक मतों के समान था परन्तु वे संगठित व धर्मान्तरण जैसे लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ रहे थे। उनके अनुयायियों की संख्या बढ़ रही थी तथा हिन्दू मत के अनुयायियों की संख्या घट रही थी। इनसे व इनके भावी परिणामों से हिन्दू लोग अनभिज्ञ व असावधान थे। ऐसे अन्धकार के समय में सूर्योदय की भांति महर्षि दयानन्द भारत की धरती पर प्रकट हुए। उन्होंने प्रज्ञाचक्षु गुरू विरजानन्द की मथुरा स्थित कुटिया में अढ़ाई वर्ष रहकर अष्टाध्यायी, महाभाष्य व निरूक्त का अध्ययन कर उनकी सहायता से वेद एवं वैदिक आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन, विचार, चिन्तन, मनन व ऊहापोह किया था। योग में उनकी प्रवृत्ति पहले से ही थी जिस कारण वह योग की उपलब्धियों से सम्पन्न व समृद्ध थे। उन्होंने वेदों का प्रचार प्रसार करना आरम्भ किया। देशभर का भ्रमण किया और जहां जाते वहां ईश्वर, जीव व प्रकृति के स्वरूप, अवैदिक मतों का यथार्थ स्वरूप, इतिहास, यज्ञ, पुनर्जन्म, वेद आदि विषयों पर उपदेश देने के साथ शंका समाधान, विचार-विनिमय व वार्तालाप, शास्त्रार्थ आदि किया करते थे। धीरे-धीरे उनकी प्रसिद्धि सारे देश में ही नहीं विदेशों में भी पहुंचने लगी। उन्होंने बौद्ध मत के ग्रन्थों सहित बाइबिल व कुरान का भी अध्ययन किया और उनकी वैदिक मान्यताओं से मिलान व तुलना की। सत्य, असत्य, विद्या तथा अविद्या की तुला पर सभी विचारों, मान्यताओं व सिद्धान्तों को तोला। इस बौद्धिक प्रक्रिया से वह सत्य मत को प्राप्त हुए तथा उन्हें यह पता चल गया कि सत्य क्या है, कैसा है और कहां है तथा असत्य क्या है और कैसे अस्तित्व में आया है। उन्हें इस बात का भी ज्ञान हुआ कि जिन-जिन ऐतिहासिक लोगों से सारे संसार के मत-मतान्तर चले हैं, उन महापुरूषों की शिक्षा, ज्ञान, विद्वता तथा उनके संस्कार आदि सहित उनकी वास्तविक योग्यता क्या थी, उनकी मंशा क्या थी और उनके अनुयायियों ने उनके विचारों, मान्यताओं व सिद्धान्तों को कितना अपनाया, कितना तोड़ मरोड़कर स्वार्थ सिद्धि का साधन बनाया। महर्षि की एक बहुत बड़ी देन यह है कि जीवात्मा इस संसार में कितना भी अध्ययन कर ले, ज्ञान की पराकाष्ठा पर भी पहुंच जाये परन्तु जीवात्मा के एकदेशी, ससीम, जन्म-जन्मान्तर के चक्र में फंसा हुआ व सुख-दुःख का भोग करता हुआ वह ज्ञान के क्षेत्र में अल्पज्ञ ही रहता है, सर्वज्ञ कदापि नहीं हो सकता। सर्वज्ञ केवल ईश्वर ही हो सकता है क्योंकि उसमें कोई न्यूनता नहीं है। उसकी बनाई हुई सृष्टि व सारे प्राणी जगत का निर्माण यह प्रकाशित कर रहा है कि इन सबका कर्ता ईश्वर सर्वज्ञ है, सर्वज्ञ है, सर्वज्ञ है।

महर्षि दयानन्द ने यह भी जाना और उन्हें प्रत्यक्ष हुआ कि ईश्वर का इकलौता पुत्र नही होता अपितु सभी प्राणी व जीवात्मायें उसके पुत्र व पुत्रियों के समान हैं। ईश्वर को किसी सन्देशवाहक की आवश्यकता नहीं है अतः आज तक उसका निजी व एकमात्र सन्देशवाहक कोई नहीं हुआ, ऐसी मान्यतायें अल्पज्ञता के कारण असत्य, भ्रान्तिपूर्ण व स्वार्थ के कारण हैं। ईश्वर को अवतार लेने की भी आवश्यकता नहीं है। वह मनु यों को, धार्मिक लोगों व पापियों को, निर्बल व बड़े से बड़े बलवानों को पैदा करता है। आवश्यकता पड़ने पर इनके विनाश के लिए उसे जन्म या अवतार लेने की किंचित भी आवश्यकता नहीं है। सर्वशक्तिमान होने के लिए उसे अपने किसी कार्य को करने के लिए विवशता, निर्बलता, अन्य किसी की सहायता की आवश्यकता भी नहीं है। सत्य एक ही होता है। ईश्वर, जीवात्मा, प्रकृति, आध्यात्मिक, धार्मिक, सामाजिक व राजनैतिक एवं अन्य सभी विषयों से सम्बन्धित सत्य ज्ञान वेदों में निहित है। वेदों का अध्ययन कर अपनी ऊहापोह से अन्य किसी विषय का ज्ञान भी सरलता से प्राप्त किया जा सकता है। वह यह भी जान गये थे कि मूर्तिपूजा, कब्रपूजा, किसी एक स्थान को पवित्र मानना व ईश्वर को किसी एक स्थान व कुछ स्थानों पर स्थित जानना व मानना सब ढ़ोंग है। ईश्वर की उपासना, भक्ति, पूजा, इबादत, प्रेयर, स्तुति, प्रार्थना आदि का वास्तविक स्थान तो मानव का हृदय है जहां आत्मा में वह ईश्वर, अहुरमजदा (जन्दावस्ता), गाड, खुदा जीवात्मा के भीतर अपने आनन्द, सर्वव्यापक व सर्वान्तरयामी स्वरूप से विद्यमान है। हृदय में स्थित वही सत्ता इस सारे संसार को बनाती, चलाती, जीवों को सुख, आनन्द आदि प्रदान करती है। वह हृदय स्थान ही सबसे सच्चा, पवित्र है तथा उपासना, पूजा, ध्यान, भक्ति, प्रेयर व इबादत आदि का स्थान है। जो लोग इस तथ्य की उपेक्षा करते हैं वह ईश्वर को जान ही नहीं सकते, ईश्वर की ऐसे लोगों को प्राप्ति तो बहुत दूर की बात है। महर्षि दयानन्द ने अपने अध्ययन व ऊहापोह से यह भी जाना की ''वेद'' - ऋग्, यजु, साम तथा अथर्व, यह चार वेद ईश्वरीय ज्ञान हैं। यह ज्ञान नित्य, अविनाशी, सनातन, सर्वहितकारी, सार्वकालिक, सार्वदेशिक है। इसमें सब सत्य विद्यायें, परा तथा अपरा दोनों, हैं तथा संसार के प्रत्येक मानव का इसके अध्ययन व अध्यापन में पूर्ण अधिकार है। महर्षि दयानन्द की मान्यताओं के लिए उनके प्रमुख ग्रन्थों, सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, आर्याभिविनय, संस्कारविधि आदि को देखना चाहिये। महर्षि दयानन्द ने अपने ज्ञान व विद्या से सारे संसार को उपकृत व आलोकित किया जिससे संसार में ईश्वर के वैदिक ज्ञान का प्रकाश सूर्य के प्रकाश के समान हुआ। इस देन के लिए सारा संसार महर्षि का ऋणी है।

हमारे इस विवेचन से यह ज्ञात होता है कि महर्षि सत्य के अन्वेषक थे तथा सत्य व असत्य दोनों को अपने विवेक से जान कर असत्य से पृथक रहे। उनके सभी धार्मिक सिद्धान्त सत्य, ज्ञान, विद्या, विज्ञान, सृष्टि क्रम की अनुकूलता के पोषक हैं। उनका आविर्भाव ऐसे समय में हुआ था जब कि हमारा सारा देश व विश्व, सत्य, आध्यात्मिक ज्ञान व विज्ञान के अभाव से कराह रहा था। मूर्तिपूजा, अवतारवाद, मृतक श्राद्ध, बाल विवाह, विधवा विवाह का विरोध, यज्ञों में पशु हिंसा, ईश्वर की सत्य उपासना व यज्ञ-अग्निहोत्र से अनभिज्ञता, विदेशयात्रा से हिन्दू धर्म से च्युत हो जाना, स्त्री-शूद्रों पर अत्याचार, अन्याय व पक्षपात का वह समय था। सारे विश्व में मुख्यतः धार्मिक जगत में अविद्या व अज्ञान का अन्धकार छाया था। महर्षि ने वेदों को हाथ में लेकर सारे विश्व को सत्य, ज्ञान व विद्या के दर्शन कराये। आज यद्यपि अज्ञान, असत्य व अविद्या पूरी तरह से दूर तो नहीं हुई परन्तु इसका जितना प्रचार हुआ उससे सारे विश्व में व भारत में भी धर्म, अध्यात्म, ज्ञान, वैज्ञानिक उन्नति का प्रकाश हुआ है। हम निष्पक्ष रूप से महर्षि दयानन्द को विश्व भर में सत्य, धर्म, वेद, ज्ञान, विद्या, त्रैतवाद, सच्ची ईश्वर उपासना, योग की प्रतिष्ठा, यज्ञ-अग्निहोत्र, गुरूकुल-विद्यालय-पाठशाला - स्कूल का प्रतिष्ठापक, स्त्रियों व विधवाओं का उद्धारक, शूद्रों का उद्धारक व मसीहा, देशभक्त, स्वतन्त्रता का मन्त्रदाता व स्वतन्त्रता का स्वप्न-द्रष्टा, सृष्टि के आरम्भ काल से महाभारत काल तक सारे विश्व में आर्यों के चक्रवर्ती राज्य का स्मरण कराने वाला, वैदिक धर्म संस्कृति का उन्नायक, पोषक, उद्धारक, उच्च कोटि का चिन्तक, दार्शनिक, विचारक, गवेषक, वानप्रस्थ व संन्यासाश्रम को पुनः स्थापित करने वाला, सभी विद्याओं में निपुण व्यक्ति के साथ-साथ वेदों के मन्त्रों का द्रष्टा ऋषि-मुनि-महर्षि मान सकते हैं। वह ''भूतो न भविष्यति'' विशेषण ये युक्त महापुरूष थे। उनके विचारों के प्रचार के आश्रय पर ही इस देशमें विज्ञान ने उन्नति की। उनके विचारों से प्रभावित विदेशी विद्वान व पश्चिमी विचारकों के ज्ञान की उषा के विकरण के प्रभाव से वहां विज्ञान की प्रगति में तीव्रता उत्पन्न हुई। यदि आज वह होते तो बचे-खुचे अन्धविश्वास, कुरीतियों, अज्ञान, साम्प्रदायिकता, मत-मतान्तरों पर प्रहार कर सारी दुनियां में एक सत्य मत की स्थापना का कार्य करते और सफल होते। सफलता इस कारण कि वह धर्म सुधार व सत्य प्रचार का जो कार्य कर रहे थे वह उनका अपने किसी निजी स्वार्थ की पूर्ति का कार्य न होकर सृष्टि के निर्माता ईश्वर की प्रेरणा से संचालित कार्य था। दुःख की बात है कि एक अज्ञात बड़े व रहस्यपूर्ण षड़यन्त्र के अन्तर्गत किसी मूर्ख से उन्हें कालकूट विष दिलाकर सन् 1883 की दीपावली के दिन उनका प्राणान्त करा दिया गया। ऋषि को इसका अनुमान भी था परन्तु वह अपने प्राणों का मोह त्यागकर सत्य व वेदों का प्रचार कर रहे थे। उनके प्राणों का घात करने के पहले भी अनेक प्रयास हो चुके थे जिसमें वह बच गये थे। हम अनुभव करते हैं कि उनकी मृत्यु, महाप्रस्थान व निर्वाण दुनियां की बहुत भारी क्षति थी। उनके द्वारा किया जा रहा मानव के उत्थान का कार्य रूक गया। उनके बाद उन जैसा धीर-गम्भीर महापुरूष महर्षि उत्पन्न नहीं हुआ। संसार के लोग पुनः अपने अपने स्वार्थों में फंस गये। हम यह भूल गये कि संसार के प्रत्येक व्यक्ति को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिये अपितु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिये। यह शिक्षा महर्षि दयानन्द ने वेदों के आधार पर दी थीं। सारे संसार के धर्म ग्रन्थों का अध्ययन करने के बाद भी गायत्री मन्त्र में निहित उत्तम विचार व संसार की उन्नति में हमारी उन्नति, अविद्या का नाश व विद्या की वृद्धि, असत्य को छोड़ना-छुड़वाना व सत्य का मानना व मनवाना जैसे विचार उपलब्ध नहीं होते। यदि होते तो आज सारा विश्व एक मत का होता और आज जो निर्दोषों का रक्तपात होता है, वह न होता।

महर्षि दयानन्द ने सारे विश्व से अज्ञान का अन्धकार दूर करने का सफल प्रयास किया। उन्होंने परोपकार की भावना से कार्य किया एवं अपने निजी उपयोग के लिए किसी से कुछ धन नहीं लिया। संसार के सभी लोग उनके कार्यों से लाभान्वित हैं, अतः सभी उनके ऋणी हैं। उनका ऋण उनके कार्यों को जारी रखकर ही चुकाया जा सकता है। हमें भी सत्य, ईश्वर, वेद को जानकर संसार के सभी मनुष्यों तक वेदों के सत्य ज्ञान का प्रचार करना है व अन्धकार से ग्रसित मानवों के जीवन को वेदों के ज्ञान के प्रकाश से आलोकित करना है। महर्षि दयानन्द के वेदों के ज्ञान के प्रचार से सारे विश्व में जो वैज्ञानिक उन्नति, धर्म-मत-मतान्तरों में परिवर्तन, सहिष्णुता व भाई-चारे की कुछ भावना में उन्नति दिखाई देती है, उसमें ईश्वर, वेद, वैदिक भाषा व उनके कार्यों का बहुत बड़ा योगदान है। उनके महाप्रस्थान व निर्वाण पर्व पर हमारी कृतज्ञतापूर्ण भावभीनी श्रद्धांजलि।

- मन मोहन सिंह आर्य
196 चुक्खूवाला-2,
देहरादून-248001 (उत्तराखण्ड)
दूरभाषः 09412985121

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 4 नवम्बर, 2013 से रविवार 10 नवम्बर, 2013

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 7/8 नवम्बर, 2013

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 6 नवम्बर, 2013

विश्वव्यापी आर्य समाज की पत्रिकाएं विभिन्न भाषाओं में

आर्य समाज की आधिकारिक वेबसाइट पर

www.thearyasamaj.org

अपनी संस्था की पत्रिकाएं भी अपलोड कर सकते हैं

UPLOAD

अथवा ईमेल से भेजें : thearyasamaj@gmail.com

प्रतिष्ठा में,

दैनिक याज्ञिकों/आर्यसमाजों के लिए खुशखबरी

MDH हवन सामग्री

मात्र 70/– किलो (5,10,20 किलो की पैकिंग)

प्राप्ति स्थान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001, दूरभाष - 23360150

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

कैलेण्डर वर्ष 2014

बढ़िया 130ग्रा. आर्ट पेपर

20×30 इंच के आकार में

मूल्य 1200/–रुपये सैंकड़ा

महर्षि दयानन्द निर्वाणोत्सव (दीपावली) तक आर्डर बुक कराने पर 10% की विशेष छूट

आज ही अपने आर्डर बुक कराएं

250 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (200/– सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें–

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–1
दूरभाष : 011-23360150,
23365959; 09540040339

आर्यजगत् का सुप्रसिद्ध चलचित्र

सत्य की राह

Vedic Path to Absolute Truth

मात्र 30/– रु.

हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में उपलब्ध

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली–2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टैलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर